संग्रह



बीकानेर, (राजपू[illegible]

अज अद्वैत अखण्ड अनूपा—ईश्वर के विशेषण ।

अपना दूर से सूझता है—समय पड़ते ही अपना याद आता है ।

अपनी करनी पार उतरनी—अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है ।
जैसा काम किया उसका वैसा फल पाया ।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता—अकेला मनुष्य कुछ नहीं कर सकता ।

असरफी लुटें कोयलों पर मुहर—बड़ी चीजें लुटें छोटी रखाई जाय ।

अपने स्वार्थ को गधा चराते—स्वार्थी उचित अनुचित सब कर बैठता है।

अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दिखाई देता है—स्पष्ट ।

औसर चूकी डोमनी गावे ताल बेताल—समय चूके पर उद्यम करने से क्या लाभ ?

अरहर की टट्टी गुजराती ताला—छोटी बात के लिये बड़ा सामान ।

अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना—निर्द्वन्द रहना ।

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगड़े—दुष्ट लोग
दूसरे को हानि पहुँचाने के लिये अपनी हानि की परवाह नहीं करते ।

अति का भला न बरसना अति की भली न धूप }
अति का भला न बोलना अति की भली न चुप } अति का
कोई काम अच्छा नहीं ।

अपने घर में कुत्ता भी सिंह हो जाता है—घर पर सबको बल आता है ।

अर्क तरुन श्री डारन कहूँ गज बांधे जाहिं—छोटे आदमी बड़ा
काम नहीं कर सकते ।

अपनी २ ढापुली अपना २ राग—मिल कर काम न करना ।

अमरौती खाकर कौन आया है—सब नाशवान हैं ।

अनमांगे मोती मिलें मांगे मिले न भीख—गुणवान् को बिना मांगे ही सब कुछ मिल जाता है।

अमानत में खयानत—धरोहर में बेईमानी करना।

अपना दाम खोटा तो परखने वाले को क्या दोष ?
यदि अपने में बुराई न होती तो दूसरा क्यों बुरा कहता।

अयाना जाने होया सयाना जाने किया—बच्चा प्यार को और समझदार आदमी काम को पहचानता है।

अस्सी की आमद चौरासी का खर्च—आमदनी से खर्च अधिक है।

अभी तो बेटी बाप की है—अब भी कुछ हो सकता है।

अधजल गगरी छलकत जाय—ओछा आदमी इतराकर चलता है।

आप काज महा काज—अपना काम अपने हाथ से अच्छा होता है।

आग का जला आग से ही अच्छा होता है—जैसे का इलाज तैसा।

आगे नाथ न पीछे पगा—आगे पीछे कोई नहीं है।

आधी छोड़ एक को धावे
ऐसा डूबे थाह न पावे } लालची मारा जाता है।

आग लगा कर पानी को दौड़ना—लड़ाई करा कर मेल का उद्योग करना।

आप न जावे सासुरे औरन को सिख देय—आप न करे और औरों को सिखावे।

आई बहू आया काम, गई बहू गया काम—आदमी के साथ काम घटता बढ़ता है।

आधी के आम हैं—थोड़े दिन का काम है (इतिकाकिया)।

आहार व्योहार में लज्जा कैसी—शरम से काम बिगड़ जाता है।

आग फूस में बैर—विरुद्ध स्वभाव वालों की बन ही नहीं सकती।

आदमी मान के लिये पहाड़ उठाता है—प्रतिष्ठा के लिये शक्ति से बाहर काम करता है।

आप मरे जग परलय—अपना स्वार्थ सबसे पहिले देखा जाता है।

आंखों के अन्धे नाम नैनसुख—गुण के विरुद्ध नाम।

आसमान का थूका मुह पर आता है—दुस्साहस के काम से अपनी बुराई होती है।

आप डूबा तो जग डूबा—अपनी ही हानि हो तो दूसरों की हानि का क्या विचार करे।

आंधरी घोडी फोफले चना मूर्ख गुण की पहिचान नहीं कर सकता।

आगे दौड पीछे चौड—पिछला काम बिगडता जाय और आगे नया शुरू करते जांय।

आदमी का आदमी ही शैतान है- आदमी ही आदमी को बिगाड देता है।

आती बहू जनमता पूत सबको अच्छा लगता है—फायदा सबको अच्छा मालूम पडता है।

आग लगते झोंपडा जो निकले सो लाभ—नुकसान होते २ जो कुछ बच रहे, फायदा ही है।

आम के आम गुठलियों के दाम—किसी वस्तु से दोहरा लाभ।

आम खाने कि पेड गिनने—मतलब से काम।

इन तिलों में तेल नहीं—जो आशा करते हो पूरी न होगी।

इस हाथ दे उस हाथ ले- अच्छे बुरे काम का फल तुरन्त मिलता है।

ईंट का घर मिट्टी कर दिया—बना बनाया काम बिगाड दिया।

ईद के चांद हो गये हो -तुम्हारे दर्शन भी नहीं होते।

ईश्वर की कृपा से सबकी कृपा है—एक ईश्वर की कृपा चाहिये।

ईश्वर देखा नहीं तो बुद्धि से तो जाना जाता है -सोचकर काम करना चाहिये।

उंगली पकड कर पहुँचा पकडना— थोडा सा सहारा मिलने पर सिर पडना।

उल्लू की दुम फाख्ता—बे जोड काम।

उधार का खाना, फूस का तापना—उधार खाना फूस के तापने की तरह पीछे दु:खदाई होता है।

उत्तम खेती मध्यम बज। निकृष्ट चाकरी भीख निदान।

पुराने लोगों ने खेती को अच्छा, तिजारत को बीच का, नौकरी नीच काम और भीख को बहुत ही बुरा बताया है।

उसकी तूती बोल रही है---उसकी अच्छी चलती है।

उलटा चोर कोतवाल को डांडे---दोषी निर्दोष पर दोष मढ़े।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः—पुरुषार्थी पुरुषों को लक्ष्मी स्वतः प्राप्त हो जाती है।

उठी पैंठ आठवें दिन लगती है-मौके को हाथ से न जाने दो।

उघरे अन्त न होय निबाहू, कालनेमि जिमि रावण राहू। कपट का काम आखिर खुल ही जाता है।

ऊंट के मुंह में जीरा---बड़े पेटू को थोड़ी सी चीज से क्या होता है।

ऊधौ का लेन न माधौ का देन---कोई बखेड़ा नहीं।

ऊंची दूकान फीका पकवान---नाम बहुत करतब थोड़ा।

ऊधौ तुम्हें द्वारका जाना—आखिर तुम्हें ऐसा करना है।

ऊँट का मुंह जाने किधर उठे--उद्दण्ड आदमी न जाने क्या कर उठे।

ऊँट किस करवट बैठे- -क्या फैसला हो।

ऊंट की चोरी निहुरे २ --बड़े काम छिप कर नहीं होते।

ऊंट के गले बिल्ली-- बे जोड़ मेल।

ऊंट बिलाई ले गई तब हांजी २ करना--ठकुर सुहाती कहना।

एक नारी सदा ब्रह्मचारी पुरुषों को एक स्त्रीव्रत होना चाहिये।

एक मियान में दो तलवार नहीं समाती- एक की जगह दो का अधिकार नहीं हो सकता।

एक और एक ग्यारह होते हैं-- एक के साथ दूसरा हो जाने से बहुत सहायता मिलती है।सङ्घ में बड़ी शक्ति है।

एक मछली तमाम पानी को गंदला कर देती है--बुरा सबको बिगाड़ देता है।

एक पथ दो काज- किसी एक काम के करने में दो काम होना।

एक तो गिलोय कड़ुवी दूसरे नीम चढ़ी-उद्दण्ड को सहारा मिलगया।

एक तो की रोटी, क्या मोटी क्या छोटी-वह बिल्कुल एक से हैं।
एक अनार सौ बीमार-एक चीज के सैकड़ों इच्छुक।
एक से दो भले मार्ग में साथ अच्छा।

एक थैली के चट्टे हैं
एक बेलि के तूमरा } सब बराबर हैं।

ओछे की प्रीति बालू की भीति- ओछे की प्रीति बालू की दीवार की तरह ठहर नहीं सकती।
ओस के चाटे प्यास नहीं बुझती थोड़ी चीज से क्या पूरा पड़ता है।
ओखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर-जब किसी काम को करना ही चाहो तो कठिनाइयों से डर कैसा ?
अन्धों में काना राजा मूर्खों में थोड़ा जानने वाला ही चतुर कहाता है।
अन्धेर नगरी अनबूझ राजा जहां राजा प्रजा में शुद्ध न्याय नहीं।
अन्धी पीसे कुत्ते खाय कोई देखने भालने वाला नहीं।
अन्धा क्या चाहे दो आंख-स्वार्थी अपना स्वार्थ चाहता है।
अन्धे के हाथ बटेर अयोग्य को बड़ी चीज मिलना।
अन्धा बांटे रेवड़ी फिर फिर अपनों ही को दे- अपनों के साथ विशेष रियायत करना, अन्याय का वर्त्ताव करना।
अन्ते मता सो गता (अन्ते मति सा गति) मरने के समय पर जैसी मति होती है वैसी गति ईश्वर देता है।
करतु सुघाइहु तें बड दोषू बड़ी सिधाई से भी हानि होती है।
करले सो काम और भजले सो राम-काम करने वाले को आलस नहीं करना चाहिये।
कमाऊ पूत किसको अच्छा नहीं लगता-काम करने वाले को सब चाहते हैं।
कभी नाव लढ़े पर कभी लढा नाव पर-संयोगसे एक को दूसरे की मदद की आवश्यकता होती है।

करघा छोड़ तमासे जाय } अपना काम छोड़ कर व्यर्थ के झगड़े
नाहक चोट जुहाला खाय } में न पड़े।

कमजोर मारखाने की निशानी–निर्बलता बुरी है।

करे तो डर और न करे तो भी डर- हर हालत में डरना चाहिये।

कहां राजा भोज कहां गंगा तेली–बे मेल मामला।

कारज धीरे होत है काहे होत अधीर–धैर्य रख कर काम करना चाहि

काला अक्षर भैंस बराबर बिलकुल अनपढ़।

काम परे ही जानिये जो नर जैसो होय-काम पडने पर ही आदमी के जी का हाल जाना जाता है।

काल करै सो आज कर आज करै सो अब्ब, पल में परलै होयगी फेर करोगे कब्ब-करना हो सो जल्दी करो।

काठ की हांडी एकही बार चढ़ती है-कपट से एकही बार काम होता है

कागा चलै हंस की चाल-बिना समझे किसी की नकल की।

काल के हाथ कमान बूढा बचै न ज्वान मृत्यु से कोई नहीं बचता।

कालेके आगे दिया नहीं जलता–बलवान के सामने किसी का बस नहीं

काजर की कोठरी में धब्बे का डर है-बुरी जगह से बुराई होती है।

काम जो आवै कामरी का ले करै कमाच छोटी चीज का काम बड़ी से नहीं निकलता।

काबुल गये मुगल बनि आये बोलन लागे बानी, आब २ करि मरि गये सिरहाने धरयो रहो पानी- किसी की अनुचित नकल करन

काली भली न सेत, दोनों को मारो एक ही खेत कोई अच्छा नहीं।

काबुल में गधे नहीं होते?-अच्छी जगह भी बुरे होते है।

काजी जी क्यों लटे, शहर के अंदेशे बिना बात की चिन्ता करना।

काले के काटे का जन्त्र न तन्त्र असाध्य अवस्था का कोई उपाय नहीं।

काम को काम सिखाता है करते २ काम आ जाता है।

कुआ की मिट्टी कुआ में लगती है-जहां की कमाई वहीं व्यय होती है

किस निर्त्ते पर तत्ता पानी किस बल या योग्यता पर काम किया जाय।

किसी को बैंगन पथ बराबर, किसी को विष बराबर एक ही से किसी को हानि होती है और किसी को लाभ।

कुंजड़ी अपने बेरों को खट्टा नहीं बताती-अपनी चीज़ को कोई बुरा नहीं कहता।

कानी के ब्याह में सौ जोखों-जिस काम में शका हो उसमें अवश्य विघ्न होता है। छिद्रेष्वनर्था बहुलि भवन्ति।

कुल्हिया में गुड़ फोरना किसी बड़े काम का थोड़ा प्रबंध।

काटे से काटा निकाला जाता है शत्रु से शत्रु लड़ाया जाता है।

कुम्हार कहने से गधे पर नहीं चढता ओछा आदमी कहने से काम नहीं करता।

कुछ दाल में काला है कुछ संदेह है।

कै हंसा मोती चुगे के लघन मर जाय स्वाभिमानी मान के साथ ही जीवन व्यतीत करते हैं।

कोयले की दलाली में हाथ काले- बुरे काम से बुराई ही मिलती है।

कौड़ी नाहीं गाठ में चलो बाग की सेर-रुपया बिना सब व्यर्थ है।

कौड़ी नहीं हो पास तो मेला लगे उदास रुपये बिना कुछ अच्छा नहीं लगता।

कौन किसी के आवे जावे दाना पानी लावे—अन्न जल मुख्य है।

कंगाली में आटा गीला—दुःख पर दुःख पड़ता।

कोढ़ी मरे सगाती चाहे—अपनासा बुरा दूसरों का भी चाहना।

का वर्षा जब कृषी सुखाने
समय चूकि पुनि का पछताने } अवसर पर काम करने से सफलता होती है।

खरी मजूरी चोखा काम—पूरे दाम देना और अच्छा काम कराना।

खलीलखाँ ने फाख्ता मार ली—छोटे काम पर घमंड करना।

खरा खेल फरुखाबादी—साफ बात है।
खरादी का काठ काटे से ही कटता है—ऋण देने ही से छूटता है, या काम करने ही से होता है।
खांड खारी का एक भाव है—अन्धेर है।
खाना शराकत रहना फराकत-मिल जुल कर रहे मगर हिसाब साफ़ रक्खे।
खिचड़ी खाते पहुँचा टूटा—बड़ा ही कोमल है।
खाला जी का घर नहीं है—काम सहज नहीं है।
खुदा की बातें खुदा ही जाने—उसकी वही जाने।
खुशामद से आमद होती है-स्पष्ट (खुशामदियों का कथन)।
खुदा गंजे को नाखून न दे- अत्याचारी को अधिकार मिलना बुरा है।
खेती खसम सेती—खेती अपने हाथ से अच्छी होती है।
खोटा बेटा और खोटा पैसा भी समय पर काम आते हैं किंवा न किसी समय हर चीज़ काम देती है।
खोरई कुतिया मखमली झूल तुच्छ आदमी का वेसा मान करना।
खोदा पहाड़ और निकली चुहिया—बहुत परिश्रम का थोड़ा फल।
गरीब की हाय बुरी होती है—गरीब को सताना अच्छा नहीं।
खूटे के सिर बछड़ा नाचे—जब मालिक में साहस है तो, नौकर सब कुछ कर सकता है।

गधों को गुलकंद
गंवार को पापड़
गधों को खुशका
—जो जिस चीज के योग्य नहीं उसको वह चीज़ देना।

गया समय हाथ नहीं आता—समय पर चूकना न चाहिये।
गधा धोने से बछड़ा नहीं होता—बनाने से प्रकृति नहीं बदलती।
गाय गये की बात—जैसा उस समय बन जाय।
गाय न बाछी नींद आवे आछी-कोई आगे पीछे न हो तो बेखटके गुजरती है।

गाव का जोगी जोगना आनगाव का सिद्ध—अपने गाम में मान नहीं होता।

गिने पुए सम्हाल खाये—बचत की सूरत नहीं।

गुरू तो गुड ही रहे चेला शक्कर होगये—गुरू से चला बढ गया।

गुड खाय गुलगुलों से आन—बनावटी परहेज़ करना।

गुम्बज की आवाज है—जैसा कहगा वैसा सुनेगा।

गुरु कीजे जान और पानी पीजे छान—निश्चय करके काम करना।

गेहू की रोटी को फौलाद का पेट होना चाहिये—विभव पाने पर निरभिमान होना कठिन है।

गंगा आन हार भागीरथ के सिर पडी—ऐसा तो होना ही था।

घर की खाड़ किरकिरी बाहर का गुड मीठा—घर की वस्तु की क़दर नहीं करते।

घर की मुरगी दाल बराबर—घर की वस्तु की क़द्र नहीं।

घर खीर तो बाहर खीर—धनवान का आदर सब जगह होता है।

घर का भेदी लंका ढाये—आपस का फूट से बड़ी हानि होती है।

घर में चूहे डंडोत करते हैं—खाने तक को नहीं है।

घर व्याह बहू कडों को डोले—काम के समय बे परवाही करना।

घडी में घडियाल—हाल ही में कुछ से कुछ होना।

घर रहे न तीरथ गये
मूड फोरत मर रहे } बेठिकाने रह कर दुःख पाना।

घोडो को घर कितनी दूर—काम करने वाले को काम करने में देर नहीं।

घोडा घास से यारी करे तो खाय क्या—मिहनताना मांगने में लाज न करनी चाहिये।

घर के पीरों को तेल का मलीदा—अपनों का कम आदर करना।

घर आये नाग न पूजिये बामी पूजन जाय—मौक़े को हाथ से नहीं जाने देना चाहिये।

घर में भुँजी भांग नहीं--अति की दरिद्रता है।
घर का द्वार खसम के हाथ -वह चाहे सो कर सकता है।
घुसिया हाकिम रुसिया चाकर--रिशवत लेने वाले हाकिम और रूठने वाले नौकर का विश्वास नहीं करना चाहिये।
घोड़े का गिरा सम्हल सकता है नजर का गिरा नहीं- ऐसा काम नहीं करना चाहिये कि किसी की नजर से गिर जाय।
घर घर मटियाले चूल्हे हैं-चिन्ता से कोई खाली नहीं।
घी कहाँ गया खिचड़ी में--अपनी चीज अपनों ही के काम आ गई।
चतुर को चौगुनी मूरख को सौगुनी दूसरे के धन का परिमाण चतुरों को चौगुना और मूर्ख को सौगुना जान पड़ता है।
चलती का नाम गाड़ी- जिसकी चलने लगे वही अच्छा है।
चमड़ी जाय पर दमड़ी नहीं जाय—अति का लालच करना।
चना और चुगल मुंह लगे अच्छे नहीं--खाने और सुनने में अच्छे लगते हैं और पीछे तकलीफ देत हैं।
चमार को अरस पर भी वेगार-दुखिया को हर जगह दुःख।
चार दिना की चांदनी फेर अँधेरी रात थोड़े दिन की वाह वाह।
चाकरी में ना करी क्या नौकरी में आज्ञा माननी ही पड़ती है।
चिराग तले अँधेरा-अपनी बुराई नहीं दीखती।
चिकना मुंह पेट खाली खाली दिखावट करना।
चीज न राखे आपनी चोर गाली देय-अपनी असावधानी से अपनी हानि करके दूसरे को दोष देना।
चूहे का जना बिल ही खोदना है अपने बाप दादों का कामकरता है।
चूनी कहे मुझे घी से खा-योग्यता से बढ़कर दावा करना।
चोरी और मुंह जोरी बुराई करना और आख दिखाना।
चोली दामन का साथ,है उनका साथ छूट नहीं सकता।
चोर गये कि अन्धियारी-फिर भी दाव लगेगा।

चोर की मा कोठी में मुंह देकर रोती है-अपने की बुराई होने में आदमी मन ही मन में दुखी होता है।

चोर की डाढ़ी में तिनका-दोषी विनापूछे ही बोल उठता है।

चोर से कह तू चोरी कर और शाह से कह तू घरपै रह दोनों ओर को भजाना।

चींटी के मरते समय पर आते हैं-नाश के समय उलटी बातें करना।

चोर २ मौसाइते भैया-एक से व्यसन वाले आपस में मिल जाते हैं।

जूआ मीठी हार-ज्वारी हारने पर बार २ खेलता है।

चौबे छब्बे होने गये दुबे रह गये-लाभ के लिये काम किया उलटी हानि हुई।

छछूंदर के सिर में चमेली का तेल-अयोग्य के हाथ अच्छी चीज लगना।

छटी का दूध जबान पर आगया-बड़ी कठिन मिहनत करनी पड़ी।

छाती पर रख कर कोई नहीं ले गया-व्यर्थ लोभ न करना चाहिये।

छींकते ही नाक कटी-बुरे काम का तुरन्त फल मिल गया।

छोटे मुंह बड़ी बात-अपनी योग्यतासे बढ़ कर बात कहना।

छोड़े गाय से नाता क्या-अब उससे हमारा कुछ मतलब नहीं रहा, छोड़ी अथाई जुहार क्या ?

चन्दन की चुटकी भली गाडी भरो न काठ-अच्छी चीज थोड़ी ही अच्छी, निकम्मी चीज़ बहुत भी अच्छी नहीं।

झगड़े की जड़, जर, जमीन, जन प्रायः झगड़ा स्त्री,धन और धरती के पीछे होती है।

झूठा खाया जाता है मीठे को-लोभ के लिये नीच काम करता है।

जब तक स्वास तब तक आस-मरने तक आशा नहीं छूटती।

जहां जाय भूखा तहां पड़े सूखा-दुखी को सब जगह दुःख है।

जहा रूख नहीं वहां अरंड ही रूख-जहा बड़ी चीज नहीं वहां छोटी ही बड़ी मानी जाती है।

जमाअत से करामात मिलकरकार्य सिद्ध होता है।

जर है तो नर है नहीं तो पूरा खर है बिना द्रव्य के आदमी को कोई नहीं पूछता।

जन्म के दुखी नाम चैनसुख-गुण के विरुद्ध नाम।

जब तक जीव कडख में तब तक बीन बजाउ-हिरन मरते २ बीण की ध्वनि पसन्द करता है।

जान है तो जहान दुनिया की कैफियत जान के साथ है।

जाओ पूत दक्षिण वही कर्म के लक्षण अकर्मण्यों का कहीं ठिकाना नहीं

जाकर जिह पर सत्य सनेहू
सो तिहि मिलत न कछु सदेहू } सच्चे स्नेही को अपना इष्ट पदार्थ मिल ही जाता है।

जामन होय मलीन सो पर सपदा सहे न जिसका मन मैला होता है वह दूसरों के वैभव को नहीं देख सकता।

जाको राखे साइयां मारि न सकि है कोय-जिसका ईश्वर रक्षक है उसको कोई नहीं मार सकता।

जितने मुंह उतनी बातें अफ़वाह योंही बढ़ा करती हैं।

जाके पांय न फटी बिवाई
सो क्या जाने पीर पराई } जिस पर पड़ती है वही जानता है।

जिसकी लाठी उसकी भैंस— शक्तिवालों को ही विजयलक्ष्मी मिलती है।

जिसकी जूती उसका सिर उसकी चीज से उसी का नुकसान करना।

जिसको पिया चाहे वही सुहागिन जिसको स्वामी चाहे वह अच्छा नौकर है।

जितना गुड़ डाला जायगा उतना ही मीठा होगा जैसा खर्च किया जाय वैसा ही अच्छा काम होगा।

जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ जिसने परिश्रम किया उसे फल मिला।

जिसका खाइये उसका गाइये-जिसका अन्नपानी खाय, वसीका पक्ष ले।

जिसके हाथ लोई उसका सब कोई-अधिकार वाले के सब आज्ञाकारी होते हैं।

जिय बिनु देह नदी बिनु वारी
जैसे ही नाथ पुरुष बिनु नारी } बिना पुरुष के स्त्री की शोभा नहीं।

जैसे कथा घर रहे तैसे गये विदेश निकम्मे का घर व बाहर रहना एकसा।

जैसी तेरी कोमरी तसे मेरे गीत-खर्च से काम होता है।

जैसे गंगा न्हाये तैसे फल पाये-जैसा किया वैसा पाया।

जैसे नागनाथ तैसे साप नाथ दोनों बराबर हैं।

जैसी बहे बयारि पीठ तब तैसी दीजै जैसा समय हो वैसा काम करो।

जैसा देश वैसा भेष जिस देश में रहे वहा की रीति ग्रहण करे।

जो विधि गया सो मोती जो होगया सो अच्छा।

जो धन दीखे जात, आधा दीजे बांट-नष्ट होती हुई सम्पत्ति में से खर्च करके बचा लेना चाहिये।

जो गरजता है सो बरसता नहीं-डींग हांकने वाला क्या काम करेगा?

जो चोरी करता है वह मोरी रखता है-काम करने वाला बचाव रखता है।

जोगी २ लड़े खप्परों की हानि-मूर्खों की लड़ाई में विशेष जोखों नहीं।

जो चढ़ेगा सो गिरेगा-जो काम करेगा तो कभी हानि भी होगी।

जोरू चिकनी मिया मजूर-व्यर्थ बनावट करना।

जो किसी को कुआ खोदता है उसको खाई तैयार है-औरों का बुरा करने वाले का स्वयं बुरा होता है

तेल देखो तेल की धार देखो - हर एक काम को धीरज से, सोच समझ कर करो।

थूक का चाटना अच्छा नहीं—कह कर लौटना ठीक नहीं।

थूक में सत्तू नहीं सनते- थोडे व्यय से बड़ा काम नहीं होता।

थोडी पूंजी खसमें खाय थोडी पूंजी वाले को दुख ही रहता है।

दर्जी की सुई कभी गजी में कभी कीमखाब में—काम वाले को कभी तगी कभी आसूदगी रहती है।

दबी बिल्ली मूसे पर कान कटाती है किसी समय बलवान को निर्बल से दबना पड़ता है।

दया बिनु सन्त कसाई —मनुष्य में दया अवश्य होनी चाहिये।

दाता दे भंडारी का पेट फटे—कोई दे किसी को बुरा लगे।

दान वित्त समान – सामर्थ्य के अनुसार दान देना चाहिये।

दाई से पेट नहीं छिपता- —जानकार से भेद नहीं छिपता।

दाने २ पर मुहर है—जिसके भाग्य का है उसको मिल जाता है।

दिये का प्रकाश स्वर्ग तक है—दान बड़ी वस्तु है।

दिन ईद रात शब्बरात सदैव प्रसन्न।

दिल से दिल को राहत है-जो कोई किसीको चाहेगा वह भी उसे चाहेगा।

दिल को करार
तब सूझे त्यौहार } चित्त को शान्ति हो तब सब अच्छा लगता है।

दुबले मारे शाहमदार दीन को ही सब सताते हैं।

दुधैल गाय की लात भली-स्वार्थ वश सब सहना पड़ता है।

दूल्हा के साथ बरात- स्वामी के साथ सेना

दूर के ढोल सुहावने हर वस्तु दूर से ही अच्छी लगती है।

दूध का जला छाछ को फूंक २ पीता है-किसी काम से हानि उठाने वाले को हर काम में अंदेशा रहता है।

देश चोरी परदेश भीख—लाज के वश लोग न देश में चोरी करता है और परदेश में भीख माँगने में शरम नहीं।

देह धरे का दण्ड है सब काहू को होय—दुःख सब पर पड़ता है।

देखी तेरी कालपी बामनपुरा उजार—कोरा नाम, तत्त्व कुछ नहीं।

दोनों दीन से गये पाडे, हलुआ हुए न माडे—कहीं ठिकाना न रहा।

दौल डाल कर शामिल होना—ज़रा सी चीज देकर साझी होना।

दाल भात में मूसरचन्द—व्यर्थ टाँग अड़ाना।

दिवाली के चौरठे से पड़ा मोटा नहीं होता—एक दिन के खाने से कुछ नहीं होता।

दोनों हाथों में लड्डू हैं—सब तरह लाभ है।

दुविधा में दोऊ गये माया मिली न राम—चिन्ता में कुछ नहीं बनता।

देखा देखी साध्यो जोग
छीजी काया बाढ्यो रोग } व्यर्थ नकल करने से हानि होती है।

धरम छोड़ धन कोऊ लेउ—बेईमानी से धन लेना अच्छा नहीं।

धर्म की जै होती है—(यतोधर्मं स्ततोजय)

धूनी पानी का सयोग है—खाने पीने का साझा है।

धोबी का कुत्ता घर का न घाट का—कहीं ठौर ठिकाना नहीं।

धरम का धरम करम का करम—स्वार्थ परमार्थ दोनों हैं।

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है! जगत पियासो जाय॥
होना उसी का सार्थक है जिससे किसी का काम निकले।

न रहे बाँस न बजे बाँसुरी—जड़ से मिटा देना।

नदी नाव का सयोग—सयोग से मिलना होता है।

नये चिकनिया अण्डी का फुलेल—भद्दीरे का काम।

नदी में रह कर मगर से वैर—बलवान से उसके पास रह कर गर नहीं करना चाहिये।

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी—किसी काम के लिये ऐसा प्रबन्ध न करना चाहिये जो न हो सके।

प्यारा पूत परोसी दाखिल—प्यारा होने से अपना नहीं रहता।

नमक का सहारा ही बहुत है थोड़े ही सहारे से काम चल जाता है।

नई नाइन बांस का नहन्ना—नतो उस को कुछ तजुरुबा है, न उसके पास कोई ठीक साधन है।

नया नो दिन पुराना सौ दिन पुरानी चीज़ से घृणा न करनी चाहिये, क्योंकि थोड़े दिन में सब चीज़ें पुरानी हो जाती हैं॥

नक्कारखाने में तूती की आवाज—बड़ों में छोटों की कौन सुनता है?

न नाम लेवा न पानी देवा—उसका कोई न रहा।

नजर चूकी माल दोस्तों का—चोरों की कसरत है।

नाई बाल कितने? जिजमान आगे आ जायेंगे जो फल प्रत्यक्ष होने वाला है उसका क्या पूछना?

नाच न जाने आँगन टेढा—अपनी अज्ञानता का दोष दूसरों पर मढ़ना।

नादान दोस्त से दाना दुशमन अच्छा—नादान से दोस्ती नहीं करनी चाहिये।

नाम बड़े दर्शन थोड़े—कोरा नाम।

नाना के आगे ननिहार की बातें—किसी विषय में अपने से अधिक जानने वाले से बातें कहना मूर्खता है।

नाम ज्ञानवती और झोली में सिर—झूठी बड़ाई मारना।

नानी तो क्वारी मर गई नवासे के नौ २ ब्याह—क्यों व्यर्थ शेखी मारता है?

नीचे की सांस नीचे ऊपर की ऊपर—दंग रह जाना।

नीयत की बरकत—ईमानदारी से धन बढ़ता है।
नौ नगद न तेरह उधार—उधार से नक़द थोड़ा भी मिलना अच्छा है।
नौ दिन चले अढ़ाई कोस—अधिक परिश्रम का थोड़ा फल।
नंगी क्या न्हाय और क्या निचोड़े—निर्धन कुछ नहीं कर सकता।
नाइन दूसरे ही के पैर धोना जानती है—दूसरे से ही कह जानते हैं स्वयं कुछ नहीं करते।
नीम हकीम खतरे जान—अयोग्य से काम के बिगड़ने का डर है।
नामर्दी तो ईश्वर ने दी मार २ तो किये जाओ—अशक्त होने पर भी कुछ करना चाहिये।
नौ सौ चूहे खाय बिलाई हज्ज को चली—उम्र भर तो अन्याय किया अब भजन करने बैठे हैं।
पढ़े न लिखे और नाम विद्यासागर—गुण के विरुद्ध नाम।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं—परतन्त्रता में सुख नहीं।
पढ़े ता हैं पर गुन नहीं—पढ़े तो हैं पर व्यवहार की शिक्षा नहीं पाई।
परदेशी की प्रीति झोल (फूस) का तापना—ये दुखदाई होते हैं। परदेशी की प्रीति से, फूस के तापने की तरह, क्षणिक सुख मिलने के बाद दुःख ही दुःख मिलता है।
पराया घर थूक का भी डर—पराये अधिकार में रहना बुरा है।
...कमाई खीर होगया दलिया—परिश्रम का उलटा फल निकला।
पराया सिर पसेरी बराबर—दूसरों के दुःख पर ध्यान न देना।
...नी का हगा ऊपर आ जाता है—बुराई छिपती नहीं है।
...चों घी में—सब तरह से सिद्धि है।
...बारह है—पूरा लाभ है।
...ती की बर पूछना नाहीं भलो विचार—काम करने के पहिले ही भलाई बुराई सोच लेना चाहिए।
... उङ्गलियों से पहुँचा भारी पाँच सात से एक की प्रतिष्ठा होता है।
...का निबाहना खाँडे की धार है—प्रीति करना तो सहज है पर निबाहना कठिन है।

पासा पड़े सो दाव राजा करे सो न्याय—शक्ति वाले की माननी ही पड़ती है।

पांच पञ्च तहां परमेश्वर—पांच पंचों की बात माननी चाहिये।

पैसे की हांडी गई तो गई कुत्ते की जाति तो जानी थोड़ी हानि तो हुई, पर, स्वभाव तो जान लिया।

पञ्च कहें बिल्ली तो बिल्ली—पंचों का झूठ कहना भी सच।

पर हित घृत जिनके मन माखी दुष्टों को, दूसरों का काम बिगाड़ने के लिये, अपना नुक़सान करना बड़ी बात नहीं।

फूह फूह ताल भरता है—थोड़े थोड़े से बहुत होता है।

फूल न पाती देवी हाहा—कोरी बातें बनाना।

बड़े बोल का सिर नीचा—घमंडी को लज्जित होना पड़ता है।

बनियां भी अपना गुड़ छिपा कर खाता है।

बकरे की माँ कबतक खैर मनावेगी—यही हाल है तो किसी न किसी दिन आपत्ति में फसेगा।

बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद— मूर्ख गुणों को नहीं समझता।

बन्दर के गले में मोतियों की माला—अयोग्य को कोई बड़ा पद, प्रतिष्ठा व वैभव मिलना।

बजाज की गठरी का झींगुर मालिक—दूसरों की वस्तु पर घमंड करना।

बगल में सोटा नाम गरीबदास—गुण के विरुद्ध नाम।

बराती खा पी कर अलग हो जाते हैं दूल्हा दुलहिन से काम पड़ता है— सिखाने वाले लड़ाई कराकर अलग हो जाते हैं।

बनी के सब साथी—अच्छी दशा में होने पर सब साथी होते हैं।

बगल में तोशा,किसका भरोसा आवश्यकीय वस्तु पास होनी चाहिये।

बासन से बासन खटकता ही है-कभी २ पास रहने वाले से बिगड़ भी जाती है। पड़ोसियों में कभी २ बिगड़ भी जाती है।

बार बार चोर की तो एक बार साह की कभी न कभी चालाकी प्रकट हो ही जाती है।

बलवान के घींसों जिसे मारे और रोने न दे-बलवान के अन्याय को कोई भी नहीं सहता।

बद अच्छा बदनाम बुरा-व्यर्थ बदनाम होना बहुत ही बुरा है।

बसन्त की खबर ही नहीं-तुम्हें असली बात मालूम ही नहीं।

बाहर वाले खा गये घर के गावें गीत-करने वालों का कुछ लाभ नहीं हुआ।

बाप न मारी पोदनी बेटा तीरन्दाज़-व्यर्थ सेखी मारते हो।

बाप की पोखर है तो क्या कीच खानी है? यदि घर गुजर नहीं है तो दूसरी जगह क्यों न प्रबन्ध किया जाय।

बावन तोले पाव रत्ती —बिलकुल ठीक।

बारह वर्ष में घूरे की दशा भी फिरती है- कभी न कभी अवश्य अच्छे दिन आवेंगे।

बारह वर्ष दिल्ली में रहे क्या भाड़ झोंका-अच्छी जगह से भी कुछ नहीं सीखा।

बारे की माँ न मरे और बूढ़े की जोरू-इनके मर जाने से बहुत कष्ट होता है।

बावरे गांव में ऊंट आया-मूर्खों को साधारण ही चीज़ अनोखी होती है

बाज़ार किस का? जो लेकर दे उसका - रुपया चुका देने वाले का बाजार से सब कुछ मिल जाता है।

भरे ब्याह में बूर खाई तो फिर क्या अब धूर खाय- अच्छी दशा में भी कष्ट से रहा, अब क्या है?

बाल की खाल निकालना-व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना।

बांह गहे की लाज-आंच में पड़के पूरा पालना।

बिल्ली खायगी नहीं तो लुढ़काय देगी दुष्ट व्यर्थ हानि करते हैं

बिल्ली के भागों छींका टूटा-सयोग से काम हुआ।
बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले न भीख- मांगना नहीं चाहिये।
बिजली कांसे ही पर पडती है-दुःख भी बड़ों पर ही पड़ता है।
बिच्छू का काटा रोवे सांप का काटा सोवे-मीठी मार बुरी है।
बिन देखे राजा चोर बिना देखे किसी का नाम नहीं ले सकते।
बिल्ली को ख्वाब में भी छीछड़े नजर आते हैं-बुरे को बुराई ही सूझती है।
बांझ क्या जाने प्रसूत की पीडा? जिसको दुःख होता है वही जानता है।
बुढिया मरी तो मरी पर आगरा तो देखा- हानि उठाने पर अनुभव तो हुआ।
बूर का लड्डू खायगा सो पछतायगा न खायगा वह भी पछतायगा दोनों तरह मुश्किल है।
वे ही मियां दरबार को वे ही चूल्हा फूकने को सब काम उसे ही करना पडता है।
बैठे से बेगार भली—कुछ न कुछ करना चाहिये।
बैले बीजे जायफल क्या बोले क्या खाय मूर्ख गुण की क़दर नहीं करता।
बैठा ठाला बनियां सेर बांट तोले-करनेवाला कुछ न कुछ करताही रहता है।
बल न कूदा कूदी गौन बिना सम्बन्ध दूसरे के बीच में पडना।
बुरी सगति से अकेला अच्छा—बुरों का साथ न करना चाहिये।
भरे में भरता है—धन से धन मिलता है।
भरी जवानी मझा ढोला-युवा अवस्था म सुस्त पडना।
भरे समुन्दर घोंघा हाथ-पूरा लाभ होने की जगह से कुछ न मिलना।
भड़भूजे की लडकी केसर का तिलक-बेजोड़ काम।
भांग खाना सहज है नशा कठिन है—बिना समझे किसी काम को कर डालना सहज है पर उसका परिणाम भोगना कठिन है।

भीख के टुकड़े बाजार में डकार-व्यर्थ घमंड करना।

भूले बनिया भेड़ खाई
अब खाऊं तो राम दुहाई } असावधानी से कोई काम करने पर पीछे पछताना पड़ता है।

भूख में किवाड़ ही पापड़-भूख में बुरी चीजें भी अच्छी लगती हैं।

भूख में गूलर ही पकवान- " " "

भूखा बंगाली भात ही भात पुकारता है स्वार्थी अपनी धुनि में मस्त है।

भूलि गई राग रंग भूलि गई जिकड़ी तीन चीज याद रहीं नौन तेल लकड़ी रोटियों की चिन्ता में सब भूल गया।

भेड़ की लात घोंटू तक अधिक से अधिक इतना कर सकेगा।

मन में राम बगल में ईंट-कपट का बर्ताव करना।

मरना विचारा तो हटना कैसा? प्राणों पर खेल कर काम करने वाला पीछे नहीं हटता।

मरता क्या न करता जो मरने से नहीं डरेगा वह सब कुछ कर सकता

मन के लड्डुओं से भूख नहीं जाती-केवल विचार से काम नहीं चलता

मन चङ्गा तो कठौती में गङ्गा-श्रद्धा से सब कुछ हो जाता है।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत मन से काम होता है।

मन उमराव कर्म दरिद्री-इच्छा पूरी होने का साधन नहीं।

मक्खी बैठी शहद पर रही पङ्ख लपटाय
हाथ मलै और शिर धुनै लालच बुरी बलाय } लालची ना होता है।

न मन भावे मूड़ हलावे झूठी नाहीं करना।

ाह नगे बैसाख भूखे-बड़ा अभागा है।

मार मार तो किये-जा नामर्दी तो ईश्वर ने दी-अशक्त होने पर भी उपाय न छोड़ना चाहिए।

मांड़ का मांड़ बिगड़ गया सब खराब हो गए।

मान का बीड़ा हीरा के समान आदर की ज़रासी चीज भी अच्छी है।

मार से भूत भागता है-मार से सब डरते हैं।
मान न मान मैं तेरा महमान-जबरदस्ती सिर पड़ना।
मानो तो देव नहीं तो पत्थर-विश्वास से सब है।
मान का पान बहुत है-आदर की जरा सी चीज भी बहुत है।
मारा घोंटू फूटी आंख-कुछ से कुछ हो गया।
माल पर जगात है- हैसियत के अनुसार खर्च किया जाता है।
मारे और रोने न दे-जबरदस्त के सामने कुछ बस नहीं चलता।
मिल गये की हरगंगा मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा।
मीठा और भर कठौती-अच्छा और बहुत।
मीठा २ गप २ कड़ुआ २ थू थू -सुख में तो आनन्द मनाना और दुःख पड़ने पर घबराना।
मुर्गी को तकुआ का घाव बहुत है-दीन जनों की थोड़ी ही हानि बहुत है।
मुल्ला की दौड़ मसजिद तक-अधिक से अधिक इतना करेगा।
मुफ्त की शराब काजी को भी रवा है-मुफ्त की चीज़ किसी को बुरी नहीं लगती।
मुडा जोगी पिसी दवा का क्या ठीक-इनकी पहचान नहीं।
मूरख की सारी रैन छैल की एक घड़ी-मूर्ख का बहुत समय का काम बुद्धिमान के थोड़े समय के काम के भी तुल्य नहीं होता।
मूल से ब्याज प्यारा होता है-ब्याज के लिये असल रुपये की परवाह नहीं।
मेंडकी को जुकाम-छोटे आदमी का नजाकत करना।
मेरे ही घर से आग लाई नाम धरा वैसान्दुर-दूसरे की चीज पर घमंड करना।
मोती की सी आब है-मान का ध्यान रखना चाहिये।
मोची के मोची रहे-जैसे के तैसे ही रहे।

मौसी का घर नहीं है—ज़रा सोच समझ कर काम करो।
यथा राजा तथा प्रजा—जैसा स्वामी वैसा ही सेवक।
यार की यारी से काम } मतलब से मतलब है।
उसके फेलों से क्या काम } (स्वार्थियों का कथन)
यथा नाम तथा गुण—जैसा नाम था वैसाही निकला।
रस्सी का साप बन गया—थोड़ी बात बहुत बढ़ गई।
रसोई का विप्र कसाई का कूकर—इनको खाने को खूब मिलता है।
रख पत रखा पत अपनी इज्जत करानी है तो दूसरों की इज्जत करो
रस में विष फैला दिया—हर्ष में शोक कर दिया।
रस्सी जल तो गई पर ऐंठ न गई—बुरी दशा होने पर भी घमंड नहीं गया।
रस से मरे तो विष क्यों दे—रसाई से काम हो तो कड़ाई न करे। (मीठी छुरी)।
राजा करे सो न्याव, पासा पड़े सो दाव—ज़बरदस्त जो कुछ करे सब ठीक ही है।
राजा किसके पाहुने जोगी किस के मीत इनकी दोस्ती पर विश्वास नहीं करना चाहिये।
राम राम जपना, पराया माल अपना—मक्कारी से पराया माल लूटना।
राम भरोसे वे रहें परवत पै हरियांय—कुछ मत करो ईश्वर करेगा वही होगा (आलसियों का कथन)
राई से पर्वत करै पर्वत राई माहि ईश्वर छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा कर सकता है।
रस खाय रसाइन बनती है गम खाना अच्छा है।
रीते भरे भरे ढुलकावे } ईश्वर को सब सामर्थ्य है।
महर करै तो फेरि भरावे }
रोग का घर खांसी, लड़ाई का घर हांसी किसी से दिल्लगी न करो।

रोज कुआं खोदना रोज पानी पीना-नित्य कमाना नित्य खाना।
रीछ का वाल भी बहुत है-सूम से थोड़ा ही धन बहुत है।

रांड सांड सीढ़ी सन्यासी } काशी में इन चारों से सावधानी रखनी
इनसे बचे तो सेवै कासी } चाहिये।

रग में भग-सुख में दुःख।
रंडी पैसे की यार है उसकी मुहब्बत धन के लिये है।
रांड का सांड रांड का लड़का बिगड़ जाता है (बेहया-उद्दण्ड)
रोजगार और दुश्मन बार बार नहीं मिलते-मौका मिलने पर इन्हें छोड़ना न चाहिये।

राजा रूठेंगे तो अपना सुहाग लेंगे क्या किसी का भाग लेंगे-मालिक नाराज होंगे तो अपनी नौकरी लेंगे।
लटा हाथी बिटौरा सा-बहुत बड़ा मनुष्य बिगड़ने पर भी छोटों से बड़ा ही रहता है।
लकीर के फकीर---अंध विश्वासी हैं।
लकड़ी के बल बंदरी नाचे--डर से काम होता है।
कमजोर की जोरू सब की सलहज--गरीब को सब छेड़ते हैं।
लड़का बगल में ढंढोरा नगर में होश हवाश दुरुस्त न होना।
लगी बुरी होती है- चित्त में चुभने पर ऊंच नीच नहीं सूझता।
लालच बुरी बला है-लालच अन्याय कराता है।
लातों के देव बातों से नहीं मानते-दुष्ट पुरुष बातों से नहीं मानते।
लाख का घर खाक कर दिया-सब बरबाद कर दिया।
लाल गूदड़े में नहीं छिपता-अच्छे बुरी स्थिति में भी नहीं छिपता।
लीक २ गाड़ी चले लीक ही चले कपूत। लीक छांडि तीनों चलें सायर, सिंह, सपूत-उन्नतिशील व्यक्ति अपनी भलाई का नया मार्ग ढूंढता है।
लाठी मारने से पानी अलग नहीं होता-अपना किसी भांति नहीं छूटता।

लिखें मूसा पढ़े ईसा अपना ही लिखा आप न पढ़ा जाय।
लूट के मूसर भी भले हैं मुफ़ की कोई चीज़ बुरी नहीं।

लोहा जाने लुहार जाने धौंकनहारे की वलाय जाने	लड़ाई कराकर बीच का दूर हो जाता है।

लोहू लगा कर शहीदों में दाखिल होना मकारी करना।
शहद की छुरी-मीठी बातें बना कर हानि पहुँचाना।
शकर खोरे को शक्कर तैयार है-जैसे को तैसी चीज मिल जाती है।
शाम के मरे को कब तक रोवें अभी से कैसे पूरा पड़ेगा।
शिकार के समय कुतिया हगासी-काम के वक्त जी चुराना।
सब के दाता राम-ईश्वर सब को देता है।
सत मति छोड़े सूरमा सत छोड़े पति जाय-कर्तव्य न भूलना चाहिये। सत्य का पालन सदा करना चाहिये।
सेत सेत सब एकसे करें कपूर कपास अच्छे बुरे की पहचान नहीं, अंधेर दुहाई।
सखी से सूम भला जो तुरत देय जवाब किसी को आशा में नहीं रखना चाहिये।
सखी के माल पर पड़े सूम की जान पर-सूम माल के लिये जान दे बैठता है।
सब दिन जात न एक समान-सुख दु ख सदैव नहीं रहते।
सखी (दाता) और सूम साल भर में बराबर हो रहते हैं स्पष्ट।
सच कहने में आधी लड़ाई होती है-सच बुरा मालूम पड़ता है।
सभी बात खोटी मुख्य दाल रोटी ऐसा काम करना चाहिये जिसमें रोटी मिले। पेट भरना ही जीवन का उद्देश्य समझने वालों की उक्ति।
सब से भली चुप्प चुप रहने में कोई बखेड़ा उठने का डर नहीं रहता।
सब गुण भरी बेतरा सोंठि किसी बात की कमी नहीं।

सब गुड़ लाट हो गया सब काम बिगड़ गया।

सदा नाव कागज की बहती नहीं कच्चा काम थोड़े दिन में बिगड़ जाता है।

सदा दिवाली साधु की जो घर गेहूं होय यदि धन है तो नित्य त्यौहार है।

सब गहनों में चन्द्रहार वह सब में अच्छा है।

सत्तू बांध के पीछे पड़ना किसी तरह से दम नहीं लेने देना।

सांप छुछूंदर का सा डौल है सब तरह मुश्किल है।

सांप मरे न लाठी टूटे-किसी का नुकसान न हो और काम हो जाय।

सांच को आंच नहीं सच को डर नहीं।

सावन सूखे न भादों हरे-सदा एक से।

सांप निकल गया लकीर पीटने से क्या-अवसर चूकने पर पछताने से क्या लाभ?

साथ के लिये भात छोड़ा जाता है साथ बड़ी चीज़ है।

सावन के अन्धे को हरा ही हरा दीखता है-धन वाले को धन ही दीखता है या सुखी को सुख ही दीखता है।

साझे की हँडिया चौराहे पर फूटती है साझे में निर्वाह होना कठिन है

सिर पर पड़ी बजाये सिद्धि आ पड़ने पर काम करना ही पड़ता है।

सिर मूंड के घुटना नहीं मंडा जाता जो कुछ कर चुका है इससे अधिक क्या करेगा।

सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता निरी सिधाई से काम नहीं चलता

सूरज धूल डालने से नहीं छिपता-अच्छा आदमी बुरों के कहने से बुरा नहीं होता।

सेख क्या जाने सावन का भाव-मूर्ख को गुण की पहिचान नहीं।

सूने घर चोरों का राज पीठ पीछे चाहे जो कुछ करो।

सुबह का भूला शाम को घर आ जाय तो भूला नहीं कहाता अपनी भूल को आप ही जल्दी सुधार ले तो अच्छा है।

सूत के बनौले हो जांय -चाहे जो कुछ हो जाय।

सूरदास कारी कामरि पे चढै न दूजो रंग-जिस पर जिस बात का पूरा प्रभाव हो गया है वह उससे नहीं छूटता।

सिद्ध को साधक पुजाते हैं-सहायता से काम होता है।

सुन खगेश अस को जग माहीं, प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं - ऐसे आदमी कम हैं जो विभव पाकर घमंड न करें।

सोकीन बुढिया चटाई का लहँगा नादीदे का बनाव।

सो घर सत्यानाश जहां है अति बल नारी-बलवान स्त्री से घर बिगड़ता है

हरी खेती ग्याभन गाय, जब जानों तब मुंह में जाय- जब तक गाय बच्चा न दे, नाज पक कर घर में न आजाय, तब तक उसका ठिकाना नहीं। अभी क्या ठिकाना है।

हर्रा लगै न फिटकरी रंग चोखा ही आवै बिना व्यय किए हुए काम बन जाय।

हम तुम राजी, तो क्या करेगा काजी-यदि दो मनुष्यों में सफा मन है तो बीच वाले बिगाड़ नहीं सकते।

हाथ की लकीर नहीं मिटती अपने छूट नहीं सकते।

हानि लाभ जीवन मरन, यश अपयश विधि हाथ- काम किये जाओ फल ईश्वर के हाथ है।

हारे भी हार और जीते भी हार-हमें विवाद करना पसन्द नहीं।

हाथ पांव की काहिली मुंह में मूछें जाय आलस के मारे जरा से काम को नहीं कर सकते।

हाथ कंगन को आरसी क्या— प्रत्यक्ष के लिये प्रमाण की क्या आवश्यकता है?

हाथी के दाँत दिखाने के और होते हैं और खाने के और-कहते कुछ और, करते कुछ और।

हाजिर में हुज्जत नहीं--जो कुछ है सो सामने है।

हिमायत की गधी पेराकी के लात मारती है--किसी बड़े आदमी के सहारे से अपने से अधिक शक्तिवान से लड़ना।

हिसाब जौ जौ का दान सौ सौ का- हिसाब साफ रहना चाहिये।

हिनोज दिल्ली दूर है--उद्देश्य सिद्धि में देरी है।

हीरे की परख जौहरी जाने- गुण की परीक्षा गुणी ही कर सकता है।

हुक्के की मारी आग बाकी का मारा गांव-हुक्के वालों की आग और बकाया लगान से गाव की हालत बुरी होती है।

हाथी के पैर में सब का पैर--बड़ों के साथ छोटों की गुजर है।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात होनहार के लक्षण पहले से ही दिखाई देते हैं।

एक करै सब लाजे--एक के करने से सब साथियों को लज्जित होना पड़ता है।

अभ्यास सारिणी विद्या--विद्या अभ्यास से आती है।

अति दर्पेन हता लंका--अति के घमंड से मनुष्य गिर जाता है।

अति भक्ति चोर के लक्षण- अत्यंत खुशामद, स्वार्थी करता है।

अटका बनियां दे उधार--दबे हुए आदमी को सब सहना पड़ता है।

अपने मुंह धन्ना बाई- अपने मुंह बड़ाई मारना।

अपना वही जो आवे काम- स्पष्ट।

अपना २ कमाना अपना २ खाना -सब का अलग २ काम करना।

अपनी फुटी न देखें दूसरे की फुली निहारे--अपनी बुराई नहीं दीखती दूसरे की आलोचना करते हैं।

अन्नदान महादान-- भूखे को भोजन देना चाहिये।

अपने आप मियां मिट्ठू बनना - अपनी बड़ाई आप करना।

अपना सा मुंह लेकर लौट जाना खिसियाना पड़ना।

आप डूबे और को भी ले डूबे–अपनी हानि हुई दूसरों की भी हानि की।
आठों गाँठ कुम्मैत–बात बात में चालाकी।
अपनी जांघ उघारिये आपन मरिये लाज अपने की बुराई किसी से नहीं कह सकते।
आती लक्ष्मी को लात मारना ठीक नहीं–काम नहीं छोड़ना चाहिये।
आप करे सो काम पल्ले हो सो दाम–हाथ का काम पास का दाम काम देता है।
आठ कनौजिया नौ चूल्हे–मिलके काम न करना।
आओ बे पत्थर पड़ मेरे पांव–अपने हाथ दुःख मोल लेना।
आगे नाथ न पीछे पगा–जिसके कोई न हो।
आत्मवत् सर्वभूतानि–सब जीवों को आत्मवत देखे।
आदमी में नऊआ, जानवर में कऊआ चालाक होता है।
आदमी जानिये बसे, सोना जानिये कसे–आदमी पास रहने से जाना जाता है।
आग खाय तो अंगारा उगले– जैसा करे वैसा पावे।
आप बीती कहूं कि जग बीती– संसार की क्या कहूं अपनी भुगती कहता हूं।
आज के मरे आज ही नहीं जलते धीरज से काम करो।
आप लिखे खुदा बांचे–अपना लिखा ही न पढ़ा जाय।
आशा परम धन है–आशा ही से काम होता है।
आशा का मरे निराशा का जिये आशा में असंतोष और निराशा में संतोष आ जाता है।
आग लगे तब कुआँ खोदना–पहिले से नहीं सोचना।
आन भारी तो माथ भारी–नज़ले से माथे में दर्द होता है।
आमों की कमाई नीबुओं में गमा दी किसी चीज का नफा किसी में लग जाय।

आँख का अंधा गाँठ का पूरा- मूर्ख धनवान।
आँख बची माल दोस्तों का- चोरों की कसरत। सावधान रहो।
आँख हुई चार तो दिल में आया प्यार- आँखों के सामने ही प्यार की मुहब्बत होती है।
आँख हुई ओट तो दिल में हुआ खोट- अलग होते ही भूल गये।
आँख कान में चार अँगुली का फर्क है- बिना देखे विश्वास नहीं करना चाहिये।
आसमान से गिरा खजूर में अटका- दाता ने दिया बीच वालों ने झमेले में डाल दिया।
आसमान से बातें करना है- बड़ा अभिमानी है।
आसमान में थेगरी लगाता है- बड़ा चालाक है।
इत्तफाक बड़ी चीज है- एका रखना चाहिये।
इक लख पूत सवा लख नाती ता रावण घर दिया न बाती- अत्यन्त गर्व करता है उसका नाश होता है।
इस हाथ दे उस हाथ ले हाल की हाल फल मिलता है।
इनके चाटे रोंगटे नहीं जमते- बड़े भीतरे हैं।
इसकी दवा लुकमान के पास नहीं- यह किसी की नहीं मानने का।
उतावला सो बावला धीरा सो गम्भीरा कार्य में धैर्य रखना चाहिये।
उखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर- काम शुरू करने पर विघ्नों से नहीं डरना चाहिये।
उसके पौ बारह हो गये- बहुत लाभ हुआ।
उसका मुँह काला हो गया कलंक लग गया।
ऊट चढे कुत्ता काटे- बुरे दिनों में अचानक विपत्ति टूट पड़ती है।
ऊजड़ खेड़ा नाम निरेड़ा- कोरा नाम ही नाम है।
ऊट चढे गदहा धाहले वह अनुचित साहस करता है।
ऊँची दुकान को फीका पकवान खाली दिखावटी काम है।
एकान्त बासा झगड़ा न झाँसा एकान्त में रहने में कुछ खटका नहीं

दाद का लगोटा नवाब से यारी-बेशर्मी के साथ शेखी मारना।
आँखों पर ठीकरी धरली-बेशर्म होगया।
दलती फिरनी छाँह नाई एकसी दशा में नहीं रहता।
तिल गुड भोजन नीच मिताई, आगे मीठ पाछे कड़ुआई-पीछे इनसे धोका होता है।
तीनों पन एक से नहीं जाते-कभी दुःख कभी सुख होता है।
तीरथ गये ह तीन जन, चित्त चचरा मन चोर, एको पाप न काटिया सो मन लादे और } बुरे दिल का मनुष्य अच्छी जगह से भी बुराई सीखता है।
तेल देखो तेल की धार देखो-जरा सोचो समझो।
तीर नहीं तो तुक्का-यदि काम होजाय तो होजाय नहीं और।
तेली जोड़े परी परी महमान लुटावे कुप्पा-लोग दूसर के धनको खर्च करने में दरग नहीं करते।
दमडी की बुलबुल टका हलाली काम थोड़ा निकले, खर्च बहुत हो।
दया धर्म नहीं तन में, मुखडा क्या देखे दरपन में- बिना दया धर्म के मनुष्य, मनुष्य ही नहीं।
दिया तले अँधेरा अपनी वा अपने पास की खबर ही नहीं। इधर उधर का प्रबन्ध।
दिल जाने सो दिलदार-जो सुख दुःख पर ध्यान रक्खे वही अपना है।
दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम फिकर में कुछ न बना।
दुबली और दो अषाढ़-दुखी पर और दुःख पड़ना।
दो घर का पाहुना भूखा मरे- काम किसी एक के सिर होना चाहिये।
नये २ हाकिम नई २ बात-रोज़ ढग बदलते हैं।
नादे की बरात में ठाकुर ही ठाकुर निकम्मों के समूह में कोई काम करने वाला नहीं।
नामी बनियाँ कमाय खाय, नामी चोर मारा जाय-किसी का नामी होना अच्छा किसी का बुरा है।

नाक कटी पर हठ न हटी मूर्ख नुकसान होने पर भी हठ नहीं छोड़ता।
नाक दबाने से मुँह खुलता है दबाव पड़ने पर बात खुलती है।
नाक काट के दुशाले से पोंछना-हानि करके हमदर्दी दिखाना।
नीम न मीठो होय जो सींचे तू घीव से-दुष्ट नेकी करने पर भी स्वभाव नहीं छोड़ता।
नेकी का बदला बदी-भलाई के बदले में बुराई।
नौकरी की पत्थर पर ज़ात है-कुछ ठिकाना नहीं।
नौ की लकड़ी, नव्वे खर्च-ज़रासी बात के लिए बहुत आडम्बर।
पर उपदेस कुसल बहुतेरे-दूसरों ही से कहते हैं करते कुछ नहीं।
पराये पीर को मलीदा, घरके देव को धतूरा-दूसरों की खातिर होती है।
पराये धन पर लक्ष्मी नरायन-दूसरे के धन की खैरात।
पढ़ें फारसी बेचें तेल, ये देखो करता के खेल-भाग्य से पढ़े लिखे भी मारे २ फिरते हैं।

पर धन राखे मूरखचन्द धरोहर रखना मूर्खता है।
पाँडे जी पछतायँगे, सूखे चने चबायगे हार कर यही करना पड़ेगा।
पराई नौकरी साप खिलाने के बराबर है। नौकरी में खटका ही रहता है।

संतोषी सदा सुखी स्पष्ट।
पराई हँसी गुड़ से मीठी-दूसरों की हँसी अच्छी मालूम पड़ती है।
पानी में पत्थर नहीं सड़ता-इसमें उसका कुछ नहीं बिगड़ता।
पिया परदेश गये अब डर काहे का-अब कोई देखने वाला नहीं।
पिछली चोंदिया खाई टे पीछे सोचते हैं।
पुराना वैद्य और नये ज्योतिषी की कदर होती है।
पैसा कहीं पेड़ पर नहीं फलता-पैसा कठिनता से मिलता है।
पैसा करे काम बीबी करे सलाम पैसे से सब होता है।
पैर का जूता पैर में जहाँ का तहाँ।

पचों के मुख परमेश्वर–पचों के मुख से जो निकले वह ठीक है।
फिर पछताये क्या हुआ जब चिडियां चुग गईं खेत समय चूकने पर पछताने से क्या ?

फूक २ कर पैर रखना–सोच समझ कर काम करना।
फूला न समाया-बहुत खुश हुआ।
बहती गंगा हाथ पखार लो-मौका है काम करलो।
बड़े मियां सो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्लाह–ये उन से भी बढ़कर हैं।

बात गये कुछ हाथ नहीं है बात न बिगड़ने पावे।
बाप मरा घर बेटा हुआ इसका टोटा उसमें गया-हानि लाभ बराबर हो गया।

बाप राज घर खाये न पान, दांत निकारे निकरे प्रान नीच थोड़े विभव से ही इतराता है।

बिच्छू का मंतर न जाने सांप के बिल में हाथ डाले-योग्यता से बढ़ कर काम करना।

विधि प्रपंच गुन अवगुन साना दुनिया में भलाई बुराई मिली हुई है।
बीती ताहि बिसारदे आगे की सुधि लेहु-स्पष्ट
बुरे काम के बुरे हवाल (नतीजा स्पष्ट)
बेईमानी का काला मुँह–बेईमानी नहीं करनी चाहिये।
बैठे से बेगार भली-बैठे रहने से कुछ करना ही अच्छा है।
भई गति सांप छछूंदर केरी किसी भांति निर्वाह नहीं।
भरी पछिया ब्राह्मण के नाम निकम्मी चीज दान करो।
मच्छड़ मार के पैंठा सिंह-ज़रा बात पर शेखी मारना।
मन में बसे सो सुपना दरसे मन की बात स्वप्न में दिखा देती है।

भन्द की बात और गाडी का पहिया आगे को चलता है-भले आदमी बात नहीं बदलते ।

मनुष्य देख कर बात करना-दूसरे का स्वभाव देख कर बातें करना।
मांगे आवे न भीख तो सुर्ती खाना सीख तमाखू वाले जरूर मांगते हैं।
माने तो देवता नही तो पत्थर-विश्वास से सब कुछ है।
मा के दुलार से लडके की खराबी-माके प्यार मे लडका बिगडता है।
मानो चाहे न मानो, हम तुम्हारे पञ्च-बिना पूछे बीच में बोलना।
मारे सिपाही, नाम सरदार का-कोई कर किसी का नाम हो।
मिजाज क्या है तमाशा, घडी में तोला घडी में माशा शीघ्र बदलने वाला स्वभाव है। छिन बुद्धि है।
मिस्सों से पेट भरता है किस्सों से नहीं बातों से काम नहीं चलता।
मियां रोते क्यों हो ? सूरत ही ऐसी हमेशा का मनहूस है।
मिया के मिया गये, बुरे २ सुपने आये दु:ख पर दु:ख।
रहे न बांस न बजे बांसुरी-कारण ही नहीं रहेगा तो कार्य कैसे होगा।
रांड सांड और नकटा भैंसा, ये बिगड़े तो होवे कैसा-इन्हें कोई नहीं सम्भाल सकता।

लड़ाई का मुंह काला लड़ाई बुरी है।
लडना दे पर बिछुडना न दे पास होकर लडते रहें मगर अलग नहीं हों।
लिखते न बने, कलम टेढ़ी-बहाने से कमजोरी छिपाना।
लेना देना कुछ नहीं लडने को मौजूद-खाली झगडा करना।
लेना एक न देना दोय फिर पूछ दण्डा नहीं।
लोमड़ी के अंगूर खट्टे-जब मिलना असम्भव होता है तब उपेक्षा की जाती है।

लोभी गुरू लालची चेला-दोनों एक से।
वर मरे के कन्या मरो, मेरी गोद का भाड़ा भरो- मुझे अपने मतलब से काम।

वक्त पड़े बांका, लोग गधे से कहें काका-दुःख में सब करना पड़ता है।
वेस्या बरस घटावही, योगी बरस बढ़ाव-स्वार्थ को झूँठ बोलते हैं।
सतुआ बाँध के पीछे पड़ो कभी मत छोड़ो। दृढ़ सङ्कल्प बनो।
साची कहै खुश रहै सत्य में पीछे डर नहीं।
साँचे का रंग रूखा सच्चे मनुष्य में बनावटी चटक मटक नहीं होती।
सुख कहना जन से, दुःख कहना मन से मन के दुःख को किसी से मत कहो।

सोना धूल में भी चमकता है-गुणी बुरी दशा में भी नहीं छिपता।
हनते को हनिये, पाप दोष नहीं गिनिये- मारने वाले को मारना ही चाहिये।

हाथ कंगन को आरसी क्या प्रत्यक्ष को कोई क्या दिखावे।
हार माने झगड़ा टूटा स्पष्ट।
हीरे की परख जौहरी जाने-गुणी ही गुण को समझता है।
आ बला गले लग बिना बात आफत मोल लेना।
अभी होंठों का दूध भी नहीं छूटा है-अभी बच्चे हो।
अब जीने का कुछ स्वाद नहीं-बस मरने पर ही दुःखों से छूटेंगे।
अब के बचे तो सब घर रचे अब की आफत से बचना मुश्किल है।
अब की बार में बेड़ा पार है बस एक बार और हिम्मत करो।

अबकी अबके साथ } समय देख कर काम होना चाहिए।
जबकी जबके साथ }

अब तो पत्थर के नीचे हाथ दबा है-अब तो उसके काबू में हूँ।
अब तो रुपये की माया है रुपये से ही सब होता है।

अच्छे भये अटल } इतना खाया कि प्राण निकल गये।
प्राण गये निकल }

अदालत का बड़ा नाजुक मामला है-जरासी बात भूलने पर अदालत में कुछ का कुछ हो जाता है।

आदर न भाव }
झूठे माल खाव } कोरी खुशी मनाना।

आधा तजे पंडित }
सरबस तजे गंवार } समय पड़ने पर बुद्धिमान थोड़ा व्यय करके शेष को बचा लेता है।

आधा तीतर आधा बटेर-गपड़ सपड़ मामला।

आधे गांव दिवाली }
आधे गांव फाग } कहीं कुछ कहीं कुछ।

अधेला न दे अधेली दे-मूर्ख मौके पर थोड़ा खर्च नहीं करता है, पीछे बहुत करता है।

आधे माघे कमली काधे-आधे माह बाद जाड़ा कम होने लगता है।

आदमी आदमी अंतर }
कोई हीरा कोई कंकर } गुणों के अनुसार आदमी बड़े छोटे होते हैं।

इधर न उधर ये बला किधर यह आफत कहां से आई।

इल्लत जाय, धोय धाय आदत कहां जाय-इल्लत छूट जाय पर टेव नहीं छूटती।

इल्म का परखना लोहे के चने चबाना है-विद्वान् की जांच करना विद्वान् का ही काम है।

ईमान है तो सब कुछ-सब कुछ खोकर धर्म बचा लिया तो सब कुछ हो जायगा।

उधार देना लड़ाई मोल लेना है
उधार दीजे दुश्मन कीजे
उधार दिया गाहक खोया
} उधार देने में नुकसान ही है लाभ नहीं।

उधार खाये बैठे हैं–तैय्यार बैठे हैं।
उगले तो अंधा, खाय तो कोढ़ी दोनों तरह मुश्किल।

ऊजर हो घर सास का जो बैर करे हरबार
पीहर घर सूरम बसे जब लग है संसार
} स्पष्ट

एक दम हजार उम्मेद एक बार में अनेक उम्मेद पूरी होना।
एक दर बंद हजार दर खुले तुम्हारे ही भरोसे नहीं थे।
एक दिन का पाहुना दूसरे दिन अप्रस्तावना-मेहमानी एक ही दिन है।
एक ही लकड़ी से सब को हांकना भले बुरे सब के साथ एकसा बर्ताव।

करनी करे तो क्यों डरे और करके क्यों पछताय
बोवै पेड़ बबूल के आम कहां से खाय
} जो कुछ करो उस का साहस से फल भोगो।

करनी खाक की, बात लाख की- काम कुछ नहीं बातें बड़ी बड़ी।
करनी न करतूत, चलियो मेरे पूत बिना बात हल्ला मचाना।
करनी न करतूत लड़ने को मौजूद-बिना बात झगड़ा करना।
कड़ुआ स्वभाव डूबती नाव कडुए स्वभाव से हर समय आफत।
कलाल की बेटी डूबने चली, लोगों ने कहा मतवाली है-दूसरे के कष्ट पर खुशी मनाना।
काली घटा डरावनी और धौली बरसन हार दिखावटी और सत्य में अन्तर है।

कल का लीपा देउ बहाय
आज का लीपा देखो आय
} गुजर गया उसे जाने दो।

खाय तो घी से, नहीं जाय जी से-खाय तो अच्छी चीज खाय नहीं मर जाय। कै हंसा मोती चुगे, कै लघन हो मरजाय।

खाक डाले चांद नहीं छिपता अच्छे मनुष्यों की बुराई करने से बुराई नहीं होती।

खाली बनिया क्या करे इस कोठी के धान उस कोठी में धरे-काम करने वाला कभी बैठा नहीं रहता।

खरबूजे को देख कर खरबूजा रंग पकड़ता है देखा देखी शौक होना।

खावे बकरी की तरह और सूखे लकड़ी की तरह खाता पीता लटता जाता है।

गधा गिरे पहाड़ से और मुर्गी के टूटे कान असम्भव बात।

गधे का जीना थोड़े दिन भला-दुखित जीवन से मरा ही अच्छा।

गैर का सिर पसेरी बराबर-दूसरे की परवाह नहीं।

गंगा किस की खुदाई है किसी एक का नहीं सबका समान अधिकार।

गाल वाला जीते और माल वाला हारे-बहुत शोर मचाकर अपनी चला लोगे।

ऐसा काम हमेशा कर, जिसमें कभी न होवे डर
ऐसी कहो न बात, कि सबका हिले हाथ
} हर काम समझ कर करो।

ओछों के पास बैठ कर अपनी भी पति जाय नीच के साथ मत रहो।

औलाती का पानी मगरे पर नहीं चढ़ता- असम्भव बात नहीं होती।

अन्धे के आगे दीपक-मूर्ख समझ की बात नहीं मानता।

अन्धे के आगे रोये, अपने दीदा खोये मूर्ख पर बात का असर नहीं होता।

कर्महीन खेती करे बैल मरे कि सूखा पड़े-अभागे को ज़रूर दु:ख होता है।

कसाई का खूंटा और खाली रहे? कोई न कोई आही मरता है।

कहै तो माँ मारी जाय न कहै तो बाप को कुत्ता खाय-दोनों तरह मुश्किल।

कहे खेत की सुने खलियान की-अयापुन्य काम करना।

कहने से कुम्हार गधा पर नहीं चढ़ता मूर्ख कहने से नहीं मानता।

काम प्यारा कि चाम? सुन्दरता नहीं, काम देखा जाता है।

काम रहे तक काजी, न रहे तो पाजी-मतलब से आदर होता है।

काल गया पर कहावत रह गई-बात बनी रहती है।

किसी का मुंह चले किसी का हाथ-कोई गाली देता है कोई मारता है।

कफन सिर से बाँधे फिरता है-मरने से नहीं डरता।

कुछ कमान झुके कुछ गोशा-कुछ कुछ दोनों अपना स्वार्थ छोड़ें। दोनों नम्र हों।

काठ की तलवार क्या काम करेगी नकली चीज काम नहीं देती।

काजी के घर के चूहे भी स्याने सब घर के चालाक हैं।

खट्टा खावे मीठे को-स्वार्थ से ही ऐसा करता है।

खर गुड़ एक ही भाव बिकाय-अन्धेर है।

खाली चना बाजे घना-बनावटी अधिक बातें मारता है।

खेले कूदे होय खराब पढ़े लिखै तो होय नवाब पढ़ना अच्छा है।

खून सिर पर चढ़ कर बोलता है दोष छिपता नहीं।

खिलाये पिलाये का नाम नहीं, ढाल देने का नाम-भलाई नहीं मानता।

गँवार की अकल सिर में मूर्ख पिटने से मानता है।

गाते २ कीरतनिया हो जाते हैं करते २ काम आजाता है।

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं समय को व्यर्थ नष्ट नहीं करना चाहिये।

गरजता बादल बरसता नहीं, बरसता है सो गरजता नहीं — कहने वाला करता नहीं और करने वाला कहता नहीं।

गगरी दाना सूत उताना ओछा थोड़े विभव से इतरा जाता है।

गये फटक रहे अटक-कुछ करना चाहते थे और कुछ हुआ।
गाडर रापी ऊनको वैठी चरे कपास-काम को काम किया नुकसान हुआ
गाडी का नाम उखली-उखटी बात करना।
गौं निकली आंख बदली-जब तक काम तब तक खातिर।
गिरगिट के से रङ्ग बदलना-बात बात में ढंग बदलना।
घर में मडुआ की रोटी बाहर लम्बी धोती शेखी बघारता है।
घडी भर की बेसरमी सब दिन का आराम निर्लज्ज को परवाह नहीं।
घी खाना शक्कर से दुनिया ठगिये मक्कर से-मक्कर से काम निकाल लेते हैं।

घर की मूछे ही मूछे हैं-कोरी शेखी मारता है।
घी के चिराग जलना-बड़े ठाठ बाट। बड़ी खुशी।
घर बैठे गंगा आई बिना परिश्रम काम सफल हुआ।
घर में सूत नहीं कोरी से लठा लठी बिना कारण झगड़ा करना।
चुल्लू भर पानी में डूब मर-बड़ी शर्म की बात है।
चिकने मुह को सभी चूमते हैं-धनवाले से सब मित्रता करते हैं।
चिकने घड़े पर पानी-बेशर्म को कोई बात नहीं लगती।
चिडियों के शिकार में शेर का सामान-जरासी बात को बड़ी तैयारी।
चोर चोरी से गया तो क्या हेरा फेरी से गया आदत का प्रभाव रहता है।
चोर का माल चडाल खाय बुरी कमाई बुरी तरह खर्च होती है।
चाकर है तो नाचा कर ना नाचे तो नौचाकर नौकर को चैन कहां
चील के घोंसले में मास यह बिलकुल असम्भव।
जीती मक्खी कोई नहीं खाता-जानकर झूठ नहीं बोला जाता।
जिस डाली पर बैठे उसी को काटे- जहा रहे वहीं की हानि करे।

जगल में मोर नाचा किसने देखा-कहीं और जगह उसने ऐसा काम किया तो हम क्या जानें।
जहाँ न पहुचे रवि, तहाँ पहुचे कवि-कवि बहुत दूर की सोचता है।
जबान शीरी मुल्क गीरी मीठा बोलना अच्छा है।
जगन्नाथ का भात, जगत पसारे हाथ मतलब की बात को सब चाहते हैं।
जाका कोडा ताका घोडा बलवान का ही अधिकार होता है।
जागे सो पावे सोवे सो खोवे सावधानी से लाभ होता है।
जाके घर में गौले गाय सो क्या छाछ पराई खाय सब कुछ होते हुए दूसरों की आशा नहीं करना।
जाके घर में माई ताकी राम बनाई घर में माता होने से कुछ खटका नहीं।
जैसी जाकी भावना तैसी ताकी सिद्धि-विचारों के अनुसार सिद्धि होती है।
जोगी काके मीत कलन्दर किसके भाई-फक्कडों में मोह माया नहीं।
टका में टका और टका में टका-लाभ में लाभ हानि में हानि।
घरवार तुम्हारा, कोठी कुठीले से हाथ मत लगाना झूठी खुशामद भरी बातें बनाना।
गढ़े कुम्हार भरे ससार किसी के काम से कोई लाभ उठाये।
घर घर के जाले बुहारती फिरती है बहुत घर बदलते हैं या सब की खुशामद करते हैं।
घर घरवाली से-स्त्री से ही घर का प्रबन्ध होता है।
घर घर यही हिसाब है ऐसा ही सब घरों में है।
घर ही में वैद मरे कैसे। प्रबन्धक घर के होने पर भी प्रबन्ध नहीं हुआ।
घरी में औलिया घरी में भूत-कभी कुछ स्वभाव कभी कुछ।
छदाम में लडाई और पैसे में सुघड़ बड़ाई-थोड़ा दो अधिक देने से वाह वाह।

छज्जे की बैठक बुरी और परछाही की छांह स्पष्ट
जिसने कोड़ा दिया वह घोड़ा भी देगा-ईश्वर पर भरोसा रखना।

जब आवे बरसन चाव
पछुवा गिने न पुरवा वायु- } स्पष्ट

जब आया देही का अन्त
जैसा गधा वैसा सन्त } मृत्यु के सम्मुख सब बराबर

जब भये सौ तब भाग गया भौ ज़ियादा कर्ज होने पर फिर डर नहीं रहता- अथवा जब सगठन होगया डर नहीं रहता।

जब भी तीन और अब भी तीन
जब पाये तब तीन ही तीन } हमेशा वही हालत।

जब भूख लगी भडुए को तब तदूर की सूझी
और जब पेट भरा तो दूर की सूझी } पेट भरने पर ही सब बातें आती हैं।

जब बिगडे जब सुघड नर क्या बिगडेगा कूढ
मट्ठे का क्या बिगडे जब बिगडे जब दूध- } अच्छे ही के बिगडने का डर रहता है।

झगडा झूठा कब्जा सच्चा-अधिकार ही सच है।
झरबेरी के जगल में बिल्ली शेर छोटी जगह में छोटे ही बड़े।
झार भी भनिये का बैरी है बनिये मे सब बुरा मानते हैं।
झटपट की घानी आधा तेल आधापानी जल्दी में काम अच्छा नहीं।
झारि बिछाही कामली रहे निमाने सोइ-ये फिकरों की उक्ति।
झोंपडी में रहे महलों के सपने देखे असम्भव कल्पना।

झुके कोई उससे झुक जाय
रुके आपसे उससे रुक जाय } जो आपकी इज्जत करे तुम उसकी इज्जत करो।

टका सा जवाब दे दिया साफ कह दिया।

टके का सारा खेल है—रुपये की माया है।

टके की मुर्गी छै टके महसूल असल से अधिक व्यय।

तक तिरिया तू आपनी पर तिरिया मत ताक
पर नारी के ताकते परै शीश में खाक। } दूसरे की स्त्री को बुरी निगाह से मत देखो।

ताल बजा के मांगे भीक
उसका जोग रहा क्या ठीक } स्वार्थवश लोगों को रिझा कर काम लेना

कहावतों पर पद्य रचना।

मुख में चारि वेद की बातें, मन पर धन पर-तिय की घातें।
धनि बगुला भक्तनि की करनी "हाथ सुमिरनी बगल कतरनी॥"
आपन चरित सुधारत नाहीं, जग कहँ उपदेशत न लजाहीं।
धिक पण्डित पन धिक् बबुआई, "कालिह के जोगी माई माई॥"
नहिं सीखत सतगुन करि नेमा, निज हट तजि न प्रचारत प्रेमा।
तापर सुख चाहत अज्ञानी, "किस बिरते पर तत्ता पानी।"
करत नहीं श्रम निज हित हेत, काल कर्म कह दूषन देत।
बुद्धि आलसिन की गई बेढ, "नाचि न जाने आगन टेढ़॥"
निशि दिन करन परे अतिशय श्रम दूखे कर पद माथा।
तब कहु धन बल बुधि विवेक विद्यादिक आवहिं हाथा॥
एक साथ हरिलेत सु सब ढिल्लरपन छुप्पा।
"हैलो जोरे परी परी मटिमान लुढ़ावे कुप्पा॥

बिन समरथि झूठी आशा दै काहुहिं कर न खराब।
" उस दाता से सूम भला जो जल्दी देइ जवाब ॥ "
अथिर अपव्यय जनित जस अविस नसाइहि साख।
" चारि दिना की चांदनी फेरि अँधेरो पाख ॥ "
होनहार बिन सोचे, करै काज मनमाना।
तिहि कह पुरुष सयाने, निपटहिं गनत अयाना ॥
कालिह अवसि दुख लहि है आजु हसे हरखाई।
" बकरा की महतारी कब लगि कुशल मनाई ॥ "
सदा न निभै कपट व्यवहार, कछु दिन यदपि लुभत ससार।
भेद खुले निन्दा सब ठाव, उतरा सहना मकरंद नाव ॥ "
केवल धनमद के मतवार, बिन विद्या बिन बुद्धि विचार।
जिन सपने न प्रेम पथ छुआ, " हिजड़ों के कब लड़का हुआ ॥ "
दुख सुख सब कह परत है, पौरुष तजहु न मीत।
" मन के हारे हार है मन के जीते जीत "
जह राखन चाहहु व्यवहार, अधिक रखहु तहं न्याय विचार।
लेहु न भूरि सकुच कर नाम " खरी मजूरी चोखा काम "
दान दीन कह दीजे, धनिहिं दिये धन छीजे।
समुझहु तौ मति धीरा " ऊंट के मुह में जीरा "
भ्रुव तजि अध्रुव बात की, चिन्ता तजि बुधराज।
जियत हंसी जो जगत में, " मरे मुक्ति केहि काज "
स्यार आपनी खोह में परे परे सरि जाहिं।
सिह पराये देश में जह मारे तह खाहिं ॥
जो कुछ लघिन परै निज हानि, तौ समाज की तजहु न कानि।
क्यों बिन स्वारथ सहिये खिल्ली, पंच कहैं बिल्ली तो बिल्ली "
जिहि सन करहु सनेह, तिहि की सब सहिलेहु।

होइहि अमित अनंद राजहु निहचौ एहु ।
प्रेमी नहीं है तू, गई जु यह गति छू "मीठी मीठी गप्प, कड़ुआ २ थू"
सुधिहि सुशीलहि सज्जनहि सोहत अस आचार ॥
"आखिन देखे चेतना मुख देखे व्यवहार" ॥

आपर हरि कहुँ कतहु रिसाहिं, ताहि निरापद थल कहुं आहिं ।
सुधि बल तासु सकल विधि घाटैं "कट चढ़े पर कूकुर काटे"
निज करनीय काम जो आय, ताहिन पर कर सौंपहु भाय ।
अस कुबुधि लखि कहिये कौन "बैल न कूदा कूदी गौन"

जहं देखहु निज अधिक बिगार, लघु लाभहु कर तजहु विचार ।
नहिं यह बुद्धिमान की चाल "दमड़ी की बुलबुल टका हलाल"
जन समूह मह आदर लहैं, साचहु परतिष्ठित सो अहैं ॥
मृषा अहङ्कृत रत यउ पाच हैं, "अपने घर के सब राजा हैं"
बल बुधि विद्या गुन अरु ज्ञान, सब पर हरि इच्छा बलवान ।
इहि मह नहि संशय राई है, "बनि आय की बनि आई है"
चाहिय सन्यासिहि सतोषा, चतुर सो गृही जु सचै कोषा
यथा लाभ सतुष्ट अयाना–"गगरी दाना सूद उताना।"
अवसर पर कीन्हों नहीं, यदि प्रयत्न हित हेत ।
"फिरि पछिताये क्या हुआ जब चिड़िया चुग गई खेत"

अहो मित्र धन सञ्चय करो, राम गुन गन छप्पर पर धरो ।
निहि चित्त बुद्धि विकल सब काल, "सौ चंडाल एक कँगाल ॥"
प्रिये पतिव्रत पथ दृढ गहहू, जेहि नइहर ससुरे सुख लहहू ।
कुलटा निंदित सबै कही है, "गत गये कुछ हाथ नहीं है ॥"
इष्ट सिद्ध में, परै जु विघ्न, तबहू मन न करो उद्विग्न ।
होइहि अवसि अटूट श्रम करो, "सतुआ बांधके पाछे परौ।"

पं० ब्रजनाथ शर्मा द्वारा दी कारोनेशन प्रेस, आगरा में छपा ।

रचना—प्रबोध।

शिक्षकों के लिये

रचना (Composition) अर्थात् वाक्य-रचना तथा निबंध लेखनादि—

पढ़ाने के लिये सिर्फ यही एक पुस्तक युक्त प्रदेशीय टेक्स्ट-बुक कमेटी ने न० जी० $\frac{१४१४}{१८११}$ ता० १६-७-१८ के अनुसार मंजूर की है।

और हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, पंजाब की टेक्स्टबुक कमेटियों से भी स्वीकृत है।

इसी से जान सकते हैं पुस्तक कितनी उपादेय है।

प्रबोध के पहिले अध्याय में—शब्दभेद, शब्दार्थ, अर्थ वैषम्य, अर्थ भिन्नता, शब्द प्रयोग का वर्णन है।

दूसरे में—वाक्य आकांक्षा, योग्यता, आसक्ति वाक्यांश वाक्य खंड, वाक्य भेद सरल, जटिल, यौगिक वाक्य-योजना, पद योजना, वाक्यों का फैलाव, पदपरिचय, पदों की भिन्न २ अवस्था, वाक्य-विश्लेषण, भाषा, महावरा, मुहाविरा, रस, गुण दोष आदि रचना सम्बन्धी बातों का वर्णन है।

तीसरे में—पहले रचना सम्बन्धी प्रारंभिक बातें अर्थात् रचना का उद्देश्य, प्रारंभिक अभ्यास, सामग्री, प्रबंध भेद, वर्णनात्मक, कथात्मक, आलोचनात्मक और व्याख्यात्मक ढांचा, समाप्ति विराम-चिन्ह, हर प्रकार के प्रबंधों का विषय विभाग करना, क्रम देना, तथा प्रभावशाली और संक्षिप्त भाषा में वाक्य रचना करने का नियम दिखाया है।

और क्रम और विभाग सहित देशी कारीगरी, और उसकी उन्नति के उपाय आदि नमूने के छोटे ४० विषयों पर प्रबंध दिये हैं। पृ० संख्या १६० मूल्य ॥)

इस पुस्तक से यही नहीं कि पुस्तक में दिये हुए विषयों पर ही लेख लिख सकें वरन हर एक नये विषय पर क्रम से विभाग कर के लेख लिखना आता है